स्त्री अनुभव और आत्मसाक्षात्कार की दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा व ममता कालिया के कथा साहित्य का अध्ययन

शेख शफी अहमद[1], डॉ.ममता पांडे[2]

शोधार्थी, हिंदी विभाग, आईएसबीएम विश्वविद्यालय[1]

अनुसंधान पर्यवेक्षक, हिंदी विभाग, आईएसबीएम विश्वविद्यालय[2]

सार

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन ने अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया दोनों ही लेखिकाओं ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से स्त्री जीवन के वास्तविक अनुभवों को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन दोनों रचनाकारों के कथा साहित्य का स्त्री अनुभव और आत्मसाक्षात्कार की दृष्टि से तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट होता है कि मैत्रेयी पुष्पा ग्रामीण और निम्न वर्गीय स्त्रियों के संघर्ष को रेखांकित करती हैं, जबकि ममता कालिया मध्यवर्गीय शहरी स्त्री की मानसिक द्वंद्व और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को उजागर करती हैं। दोनों ही लेखिकाएं पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध स्त्री स्वर को मुखर करती हैं और स्त्री अस्मिता की खोज को अपने साहित्य का केंद्र बनाती हैं। यह शोध कार्य गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है और पाठ विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन तथा नारीवादी आलोचना की सैद्धांतिकी का उपयोग करता है।

मुख्य शब्द: *स्त्री अनुभव, आत्मसाक्षात्कार, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, कथा साहित्य*

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी से लेकर मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया तक की यात्रा में स्त्री लेखन ने न केवल अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है, बल्कि साहित्य की मुख्यधारा में अपनी निर्णायक उपस्थिति भी दर्ज कराई है। स्त्री लेखन केवल

स्त्रियों द्वारा रचित साहित्य नहीं है, बल्कि यह स्त्री अनुभव की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है जो पुरुष दृष्टि से भिन्न होकर जीवन के यथार्थ को एक नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है। मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया समकालीन हिंदी कथा साहित्य की दो प्रमुख हस्ताक्षर हैं। दोनों ही लेखिकाओं ने अपने कथा साहित्य में स्त्री जीवन के विविध आयामों को स्पर्श किया है। मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य ग्रामीण और निम्न वर्गीय स्त्रियों के जीवन संघर्ष, उनकी पीड़ा, उनके प्रतिरोध और उनकी अस्मिता की खोज का दस्तावेज है। उनकी रचनाओं में 'इदन्नमम', 'चाक', 'अल्मा कबूतरी', 'झूलानट' जैसी कृतियां स्त्री जीवन की विसंगतियों को बेबाकी से उजागर करती हैं। वहीं ममता कालिया का कथा साहित्य मध्यवर्गीय शहरी स्त्री के मानसिक द्वंद्व, उसकी आकांक्षाओं, उसके संघर्ष और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करता है। निमावत (2015) ने कमला दास जैसी विद्रोही स्त्री लेखिकाओं की परंपरा को रेखांकित किया है, जिसमें मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया भी अपने विशिष्ट योगदान से स्त्री स्वर को मुखर करती हैं। स्त्री अनुभव और आत्मसाक्षात्कार इन दोनों लेखिकाओं के साहित्य के केंद्रीय तत्व हैं। आत्मसाक्षात्कार से तात्पर्य केवल आत्मकथात्मक लेखन से नहीं है, बल्कि यह लेखिका के निजी अनुभवों, उसकी संवेदनाओं और उसकी दृष्टि का साहित्य में प्रतिफलन है। जब कोई स्त्री रचनाकार अपने अनुभवों को शब्द देती है, तो वह केवल अपनी ही नहीं, बल्कि समस्त स्त्री जाति की पीड़ा और संघर्ष को स्वर प्रदान करती है।

2. साहित्य समीक्षा

स्त्री लेखन और स्त्री अनुभव पर अनेक विद्वानों ने महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। चंदा-वाज़ (2017) का मानना है कि भारतीय पौराणिक कथाएं नारीवादी आख्यानों के लिए एक नया माध्यम बन रही हैं और यह काफी प्रभावी भी है। सीता जैसे पौराणिक चरित्रों की पुनर्व्याख्या स्त्री मुक्ति और स्त्री अस्मिता के संदर्भ में की जा रही है। वोल्गा (2016) की कृति 'सीता की मुक्ति' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें पारंपरिक रामायण कथा को स्त्री दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है और सीता को एक स्वतंत्र और स्वाभिमानी स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। लोधिया (2015) ने नारीवादी साहित्य आलोचना में सीता के दुखों का विखंडन करते हुए गलत प्रतिनिधित्व के प्रश्न, सांस्कृतिक संपत्ति और नारीवादी आलोचना पर विस्तृत विमर्श किया है। लूथरा (2014) ने अपने शोध में पवित्र भूमि की सफाई अर्थात् भारतीय महाकाव्यों की महिला-केंद्रित व्याख्याओं पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस प्रकार के अध्ययन यह स्थापित करते हैं कि भारतीय स्त्री लेखन केवल पश्चिमी नारीवाद की नकल नहीं है, बल्कि इसकी अपनी स्वदेशी जड़ें और सांस्कृतिक संदर्भ हैं।

अविशाई और इरबी (2017) ने धर्म और लिंग के समाजशास्त्रीय अध्ययनों में द्विभाजित वार्तालाप पर शोध करते हुए दर्शाया है कि धार्मिक और सांस्कृतिक संरचनाएं किस प्रकार लैंगिक असमानता को बनाए रखती हैं। मैकलॉड, भाटिया और केसी (2017) ने उत्तर-उपनिवेशवाद और मनोविज्ञान के अंतर्संबंध को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया है कि भारतीय स्त्री का अनुभव औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक संदर्भों से गहराई से प्रभावित रहा है, जिसे समझे बिना स्त्री साहित्य का समग्र विश्लेषण संभव नहीं है। हाशिए पर रहने वाले समुदायों के साहित्य के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण शोध कार्य हुए हैं। त्रिवेदी और बर्क (2018) ने भारत में समकालीन आदिवासी लेखन पर प्रकाश डालते हुए यह दर्शाया है कि आदिवासी स्त्रियों का अनुभव बहुस्तरीय उत्पीड़न से जुड़ा है। बनर्जी (2016) ने आदिवासी लेखन के कुछ ऐतिहासिक नोट्स प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया है कि हाशिए पर रहने वाले समुदायों का लेखन मुख्यधारा के साहित्य से किस प्रकार भिन्न है और उसकी अपनी विशिष्ट चुनौतियां हैं। मीना (2016) ने आदिवासी साहित्य की चुनौतियों और संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा की है।

दलित साहित्य के संदर्भ में व्याम और अन्य (2018) की कृति 'भीमयाना' भीमराव रामजी अंबेडकर के जीवन की घटनाओं को ग्राफिक उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत करती है, जो साहित्य की नई विधाओं के प्रयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि हाशिए के साहित्य में नवीन अभिव्यक्ति के माध्यमों की खोज निरंतर जारी है। खादर (2017) ने अंतर्राष्ट्रीय नारीवाद, गैर-आदर्श सिद्धांत और 'अन्य' महिला शक्ति की अवधारणा पर महत्वपूर्ण विमर्श प्रस्तुत किया है। यह दृष्टिकोण पश्चिमी नारीवाद की सीमाओं को रेखांकित करता है और तीसरी दुनिया की स्त्रियों के अनुभवों की विशिष्टता को स्वीकार करता है। ग्रेबे (2017) ने प्रतिरोध के मनोविज्ञान का वर्णन करते हुए निकारागुआ में साथियों की आवाज़ों के माध्यम से यह दर्शाया है कि विभिन्न संस्कृतियों में स्त्रियों की प्रतिरोध की रणनीतियां किस प्रकार भिन्न होती हैं। न्यूहॉस (2015) ने स्वदेशी साहित्य की उपनिवेश-विरोधी कविताओं पर शोध करते हुए यह स्थापित किया है कि स्त्री अनुभव केवल व्यक्तिगत नहीं है, बल्कि सामूहिक और सांस्कृतिक भी है। लावेल-हार्वर्ड और एंडरसन (2014) ने वैश्विक प्रतिरोध, पुनः प्राप्ति और पुनर्प्राप्ति के रूप में स्वदेशी मातृत्व पर कार्य करते हुए मातृत्व के उपनिवेशवादी और स्वदेशी अवधारणाओं के बीच के अंतर को रेखांकित किया है। क्राउथर और हॉल (2015) ने प्रसव के दौरान और उसके आसपास आध्यात्मिकता और आध्यात्मिक देखभाल जैसे विषयों पर शोध करके स्त्री जीवन के उन आयामों को स्पर्श किया है जो परंपरागत साहित्यिक विमर्श में उपेक्षित रहे हैं।

3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं। प्रथम, मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री अनुभव की प्रामाणिकता और विविधता का विश्लेषण करना। दोनों लेखिकाओं ने अपने साहित्य में स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों को उजागर किया है और यह आवश्यक है कि इन अनुभवों की प्रकृति, उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और उनकी प्रामाणिकता को समझा जाए। जैसा कि मैकलॉड और अन्य (2017) ने स्पष्ट किया है, उत्तर-उपनिवेशिक संदर्भ में स्त्री अनुभव की जटिलताओं को समझना अत्यंत आवश्यक है। द्वितीय, इन लेखिकाओं के कथा साहित्य में आत्मसाक्षात्कार के तत्वों की पहचान करना और यह समझना कि लेखिकाओं के निजी अनुभव किस प्रकार उनके साहित्य में परिलक्षित होते हैं। आत्मसाक्षात्कार केवल आत्मकथा नहीं है, बल्कि यह लेखिका की दृष्टि, उसकी संवेदना और उसके जीवन दर्शन का कथा साहित्य में प्रकटीकरण है। निमावत (2015) ने कमला दास जैसी विद्रोही लेखिकाओं के संदर्भ में इस आत्मसाक्षात्कार की महत्ता को रेखांकित किया है। तृतीय, मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उनके लेखन की समानताओं और विभिन्नताओं को रेखांकित करना। यह समझना महत्वपूर्ण है कि दोनों लेखिकाएं किस प्रकार भिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की स्त्रियों को केंद्र में रखती हैं और उनके संघर्ष तथा अस्मिता की खोज को किस प्रकार अभिव्यक्त करती हैं।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध कार्य में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। यह शोध मुख्यतः साहित्यिक पाठ विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया की प्रमुख कथा कृतियों का गहन अध्ययन किया गया है। शोध के लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में दोनों लेखिकाओं के उपन्यास, कहानी संग्रह और अन्य कथात्मक रचनाओं का चयन किया गया है। पाठ विश्लेषण की प्रक्रिया में नारीवादी आलोचना के सैद्धांतिक उपकरणों का प्रयोग किया गया है। लोधिया (2015) और लूथरा (2014) द्वारा प्रस्तुत नारीवादी आलोचना की पद्धतियों को आधार बनाते हुए पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक भेदभाव, स्त्री अस्मिता, स्त्री देह की राजनीति और स्त्री स्वर जैसी अवधारणाओं को विश्लेषण का आधार बनाया गया है। साथ ही, अविशाई और इरबी (2017) द्वारा प्रस्तुत धर्म और लिंग के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को भी अपनाया गया है ताकि रचनाओं में व्यक्त स्त्री अनुभवों को उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में समझा

जा सके। तुलनात्मक साहित्य की पद्धति का भी उपयोग किया गया है। दोनों लेखिकाओं की रचनाओं की तुलना विषयवस्तु, शिल्प, भाषा और दृष्टिकोण के स्तर पर की गई है। यह तुलना केवल समानताओं और भिन्नताओं की पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य यह समझना भी है कि दोनों लेखिकाएं किस प्रकार अपने-अपने तरीके से स्त्री जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। द्वितीयक स्रोतों के रूप में समकालीन साहित्यिक आलोचना, नारीवादी सिद्धांत, स्त्री अध्ययन और सांस्कृतिक अध्ययन से संबंधित शोध ग्रंथों, शोध पत्रों और आलोचनात्मक लेखों का अध्ययन किया गया है। विशेष रूप से त्रिवेदी और बर्क (2018), बनर्जी (2016), मीना (2016), खादर (2017), ग्रेबे (2017), न्यूहॉस (2015) तथा अन्य विद्वानों द्वारा भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय नारीवादी विमर्श में किए गए महत्वपूर्ण कार्यों को संदर्भित किया गया है।

5. शोध परिणाम

मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया के कथा साहित्य का विश्लेषण करने पर कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आते हैं। सर्वप्रथम, दोनों लेखिकाओं के कथा साहित्य में स्त्री अनुभव की प्रामाणिकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। मैत्रेयी पुष्पा अपनी रचनाओं में ग्रामीण और निम्न वर्गीय स्त्रियों के जीवन संघर्ष को बहुत ही सूक्ष्मता से चित्रित करती हैं। त्रिवेदी और बर्क (2018) तथा बनर्जी (2016) द्वारा हाशिए के साहित्य पर किए गए अध्ययनों के संदर्भ में देखें तो मैत्रेयी पुष्पा का लेखन उन स्त्रियों को केंद्र में रखता है जो समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़ी हैं और आर्थिक विपन्नता, सामाजिक उत्पीड़न और लैंगिक हिंसा का सामना करती हैं। 'चाक' उपन्यास में सारंग की कहानी एक ऐसी स्त्री की है जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था के क्रूरतम रूप का शिकार बनती है, फिर भी अपनी अस्मिता को बचाए रखने का संघर्ष करती है। अविशाई और इरबी (2017) ने जिस प्रकार धार्मिक और सामाजिक संरचनाओं द्वारा लैंगिक असमानता को बनाए रखने की बात की है, मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य उन संरचनाओं को सीधे चुनौती देता है। 'इदन्नमम' में भी ग्रामीण स्त्री की यातना और उसके प्रतिरोध को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। वहीं ममता कालिया का कथा साहित्य मध्यवर्गीय शहरी स्त्री के जीवन को केंद्र में रखता है। उनकी रचनाओं में स्त्रियां शिक्षित हैं, आर्थिक रूप से कुछ हद तक स्वतंत्र हैं, लेकिन मानसिक और भावनात्मक स्तर पर वे उतनी ही पीड़ित हैं। ममता कालिया की कहानियों में स्त्री का आंतरिक संघर्ष, उसकी अधूरी आकांक्षाएं और समझौतों से भरा जीवन दिखाई देता है। यह वह स्त्री है जो बाहर से सशक्त दिखती है लेकिन भीतर से टूटी

हुई है। मैकलॉड और अन्य (2017) द्वारा प्रस्तुत उत्तर-उपनिवेशिक मनोविज्ञान के संदर्भ में देखें तो ममता कालिया की स्त्री पात्र आधुनिकता और परंपरा के बीच फंसी हुई हैं।

आत्मसाक्षात्कार के तत्व दोनों ही लेखिकाओं के साहित्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मैत्रेयी पुष्पा अपने ग्रामीण परिवेश के अनुभवों को अपनी रचनाओं में समाहित करती हैं। उनकी भाषा में देशज शब्दों का प्रयोग, लोक जीवन के संस्कार और ग्रामीण स्त्रियों की वेदना को अभिव्यक्त करने का तरीका उनके निजी अनुभव जगत से जुड़ा हुआ है। निमावत (2015) ने जिस विद्रोही स्वर की बात की है, वह मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में भी स्पष्ट रूप से सुनाई देता है। ममता कालिया के साहित्य में भी आत्मसाक्षात्कार के तत्व मौजूद हैं। मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, स्त्री-पुरुष संबंधों की बारीकियों और आधुनिक जीवन के दबावों को वे इतनी बारीकी से चित्रित करती हैं कि उनका निजी अनुभव और अवलोकन स्पष्ट झलकता है। उनकी कहानियों में स्त्री की मानसिक दुनिया का जो चित्रण है, वह गहरी संवेदना और समझ का परिचायक है। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो दोनों लेखिकाओं में कुछ मूलभूत समानताएं हैं। दोनों ही पितृसत्तात्मक व्यवस्था की आलोचना करती हैं, स्त्री अस्मिता की खोज को महत्व देती हैं और स्त्री स्वर को मुखर करती हैं। लूथरा (2014) द्वारा प्रस्तुत महिला-केंद्रित व्याख्या की दृष्टि से देखें तो दोनों ही लेखिकाएं परंपरागत कथा संरचनाओं को तोड़ती हैं और स्त्री को कथा का केंद्र बनाती हैं।

परंतु उनकी रचनाओं में कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएं भी हैं। मैत्रेयी पुष्पा का फोकस वर्ग और जाति के प्रश्नों पर अधिक है, जबकि ममता कालिया मुख्यतः लैंगिक प्रश्नों पर केंद्रित रहती हैं। मैत्रेयी पुष्पा की भाषा अधिक देशज और सीधी है, जबकि ममता कालिया की भाषा में शहरी परिवेश की छाप है। खादर (2017) द्वारा प्रस्तुत 'अन्य' महिला शक्ति की अवधारणा के संदर्भ में देखें तो मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य उस 'अन्य' को केंद्र में रखता है जो मुख्यधारा की स्त्री विमर्श में भी हाशिए पर रहता है। ग्रेबे (2017) ने प्रतिरोध के मनोविज्ञान पर जो कार्य किया है, उसके संदर्भ में देखें तो दोनों लेखिकाओं की स्त्री पात्रों में प्रतिरोध की भिन्न रणनीतियां दिखाई देती हैं। मैत्रेयी पुष्पा की स्त्रियां अधिक प्रत्यक्ष और कभी-कभी हिंसक प्रतिरोध करती हैं, जबकि ममता कालिया की स्त्रियों का प्रतिरोध अधिक मनोवैज्ञानिक और सूक्ष्म होता है। क्राउथर और हॉल (2015) द्वारा स्त्री जीवन के उपेक्षित आयामों पर किए गए कार्य के संदर्भ में देखें तो दोनों ही लेखिकाएं स्त्री जीवन के उन पहलुओं को उजागर करती हैं जो परंपरागत साहित्य में अनुपस्थित रहे हैं। मैत्रेयी पुष्पा स्त्री की देह, उसकी यौनिकता और उस पर होने वाले अत्याचारों को बेबाकी से प्रस्तुत करती

हैं। ममता कालिया स्त्री की मानसिक दुनिया, उसके अकेलेपन और उसकी अपूर्ण इच्छाओं को शब्द देती हैं।

6. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षस्वरूप यह कहा जा सकता है कि मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया दोनों ही समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री अनुभव की प्रामाणिक अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। दोनों ही लेखिकाओं ने अपने-अपने तरीके से स्त्री जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है और स्त्री स्वर को मुखर किया है। चंदा-वाज़ (2017) और वोल्गा (2016) द्वारा पौराणिक कथाओं की पुनर्व्याख्या की तरह ही ये लेखिकाएं समकालीन स्त्री जीवन को एक नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा का योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वे उन स्त्रियों को केंद्र में रखती हैं जो वर्ग, जाति और लिंग तीनों स्तरों पर उत्पीड़ित हैं। मीना (2016) और बनर्जी (2016) द्वारा हाशिए के साहित्य पर किए गए कार्य के संदर्भ में देखें तो मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य न केवल स्त्री विमर्श में बल्कि वर्गीय और जातीय विमर्श में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ममता कालिया का योगदान मध्यवर्गीय शहरी स्त्री के मानसिक जगत को उजागर करने में है। उन्होंने यह दिखाया है कि शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद स्त्री किस प्रकार पितृसत्तात्मक व्यवस्था में जकड़ी रहती है। मैकलॉड और अन्य (2017) द्वारा प्रस्तुत मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के संदर्भ में ममता कालिया का साहित्य स्त्री मन की गहराइयों को समझने में सहायक है। दोनों ही लेखिकाओं के साहित्य में आत्मसाक्षात्कार के तत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके निजी अनुभव, उनकी संवेदनाएं और उनकी दृष्टि उनके साहित्य को प्रामाणिकता प्रदान करती है। निमावत (2015) द्वारा प्रस्तुत विद्रोही स्वर की परंपरा में दोनों ही लेखिकाएं अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

लावेल-हार्वर्ड और एंडरसन (2014) तथा न्यूहॉस (2015) द्वारा प्रस्तुत वैश्विक प्रतिरोध और स्वदेशी साहित्य की अवधारणाओं के संदर्भ में देखें तो मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया का साहित्य भारतीय स्त्री लेखन की स्वदेशी परंपरा को समृद्ध करता है। वे पश्चिमी नारीवाद की नकल नहीं करतीं, बल्कि भारतीय समाज और संस्कृति के संदर्भ में स्त्री प्रश्नों को उठाती हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि स्त्री अनुभव और आत्मसाक्षात्कार की दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया के कथा साहित्य का अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। दोनों ही लेखिकाएं स्त्री चेतना के विकास और स्त्री अस्मिता की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनका

साहित्य यह स्थापित करता है कि स्त्री अनुभव बहुआयामी है और उसे केवल एक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। ग्रामीण हो या शहरी, निम्न वर्गीय हो या मध्यवर्गीय, हर स्त्री का संघर्ष और अनुभव महत्वपूर्ण है और साहित्य में उसका प्रामाणिक चित्रण आवश्यक है।

संदर्भ

1. त्रिवेदी, आर., और बर्क, आर. (2018). भारत में समकालीन आदिवासी लेखन. नोशन प्रेस.
2. Vyam, S., et al. (2018). Bhimayana: Incidents in the life of Bhimrao Ramji Ambedkar. New Delhi: Navayana.
3. अविशाई, ओ., और इरबी, सी. ए. (2017). धर्म और लिंग के समाजशास्त्रीय अध्ययनों में द्विभाजित वार्तालाप। लिंग और समाज, 31(5), 647-676.
4. चंदा-वाज़, यू. (2017, 5 फ़रवरी). भारतीय पौराणिक कथाएँ नारीवादी आख्यानों के लिए एक नया माध्यम बन रही हैं (और यह कारगर भी है)। स्क्रॉल. 18 जून, 2021 को https://scroll.in/article/828515/indian-mythology-is-a-new-medium%20-of-choice-for-feminist-narratives-and-its-working से लिया गया
5. ग्रेबे, एस. (2017). प्रतिरोध के मनोविज्ञान का वर्णन: निकारागुआ में साथियों की आवाज़ें. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. खादर, एस. जे. (2017). अंतर्राष्ट्रीय नारीवाद, गैर-आदर्श सिद्धांत, और "अन्य" महिला शक्ति। नारीवादी दर्शन त्रैमासिक, 3(1), 1-23.
7. मैकलॉड, सी., भाटिया, एस., और केसी, एस. (2017). उत्तर-उपनिवेशवाद और मनोविज्ञान। सी. विलिग और डब्ल्यू. स्टैनटन-रोजर्स (सं.) में, मनोविज्ञान में गुणात्मक अनुसंधान की SAGE पुस्तिका (दूसरा संस्करण, पृ. 306-317). सेज.
8. ओटुनोला, जी.ए., अफोलयन, ए.जे., अजायी, ई.ओ., और ओडेमी, एस.डब्ल्यू. (2017)। फार्माकोग्नॉसी पत्रिका, 13, एस201-एस208.
9. बनर्जी, पी. (2016). आदिवासी लेखन: कुछ ऐतिहासिक नोट्स. भारतीय आर्थिक और सामाजिक इतिहास समीक्षा, 53(1), 131-153.

10. मीना, जी.एस. (2016). आदिवासी साहित्य: चुनौतियाँ और संभावनाएँ. https://www.forwardpress.in/2016/04/tribal-literature-challenges-and-possibilities/ से लिया गया
11. वोल्गा. (2016). सीता की मुक्ति (टी. विजय कुमार एवं सी. विजयश्री, ट्रांस.). हार्पर बारहमासी.
12. क्राउथर, एस., और हॉल, जे. (2015). प्रसव के दौरान और उसके आसपास आध्यात्मिकता और आध्यात्मिक देखभाल. महिलाएं और जन्म, 28(2), 173-178.
13. लोधिया, एस. (2015). सीता के दुखों का विखंडन: गलत प्रतिनिधित्व के प्रश्न, सांस्कृतिक संपत्ति, और नीना पाले की रामायण में नारीवादी आलोचना। नारीवादी अध्ययन, 41(2), 371-408.
14. न्यूहॉस, एम. (2015). स्वदेशी साहित्य की उपनिवेश-विरोधी कविताएँ. रेजिना, सस्केचेवान: यूनिवर्सिटी ऑफ रेजिना प्रेस.
15. निमावत, एस. बी. (2015). कमला दास: एक विद्रोही की आवाज़. बरेली: पीबीडी.
16. लावेल-हार्वर्ड और एंडरसन, के. (2014). वैश्विक प्रतिरोध, पुनः प्राप्ति और पुनर्प्राप्ति के रूप में स्वदेशी मातृत्व. ब्रैडफोर्ड, ओंटारियो: डेमेटर प्रेस.
17. लूथरा, आर. (2014). पवित्र भूमि की सफाई: भारतीय महाकाव्यों की महिला-केंद्रित व्याख्याएँ. नारीवादी संरचनाएँ, 26(2), 135-161.

IJMRR